क्या मैं पर को सुखी-दुखी कर सकता हूँ ?

अहा ! जीव स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान है, उसे वैसा न मानना तथा राग को अपना स्वभाव मानना ह्न यह सब हिंसा है; क्योंकि ऐसी मान्यता में अपना घात होता है। अरे ! मैं पर की रक्षा करता हूँ ह्न ऐसे अभिप्राय का सेवन करके अज्ञानी ने अनादि से आत्मघात ही किया है।

एकमात्र वीतरागी अहिंसा ही मुक्ति का मार्ग है। मैं पर को बचा सकता हूँ, पर की रक्षा कर सकता हूँ, पर को जीवनदान देना मेरा धर्म है ह्न ऐसा जो मानता है, वह मूढ़ है, मिथ्यादृष्टि है; क्योंकि पर को मारना या बचाना, सुखी या दुखी करना किसी के हाथ में है ही नहीं। सभी जीव अपने-अपने पुण्य-पापानुसार या ज्ञान-अज्ञान के अनुसार सुखी-दुःखी होते हैं। तथा अपने आयुकर्म के निमित्त से जीते-मरते हैं।

अहा ! आत्मा का स्वभाव तो त्रिकाली शुद्ध ज्ञानानन्दस्वभावी, वीतरागस्वभावी व दयास्वभावी ही है और उसमें अन्तर्दृष्टि करने से पर्याय में भी राग की उत्पत्ति न होने से चैतन्य की जो निर्मल-परिणति, वीतराग- परिणति की उत्पत्ति होती है, वस्तुतः तो वही दयाधर्म है; परन्तु ऐसा दयाधर्म सम्यग्दृष्टि ज्ञानी धर्मात्मा जीवों के होता है, अज्ञानी के नहीं।

हाँ, विकल्प के कारण सम्यग्दृष्टियों को पर की रक्षा का भाव भी होता है; तथापि उनकी श्रद्धा में ऐसा भाव नहीं होता कि ह्न मैं पर की रक्षा कर सकता हूँ अर्थात् ऐसा अहंभाव नही होता कि मैं किसी अन्य को बचा या मार सकता हूँ अथवा उन्हें तो ऐसा पक्का श्रद्धान है कि पर जीव का जीवन-मरण तो उसकी योग्यता से, उसकी आयु के उदय या क्षय के कारण होता है, उसमें मेरा कोई कर्तृत्व नहीं है।

ह्न प्रवचनरत्नाकर: भाग 8, पृष्ठ : 65-66

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 22 254 अंक : 2

प्रवचनसार पद्यानुवाद

ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार

शुभपरिणामाधिकार

देव-गुरु-यति अर्चना अर दान उपवासादि में।
अर शील में जो लीन शुभ उपयोगमय वह आतमा।।69।।
अरे शुभ उपयोग से जो युक्त वह तिर्यग्गति।
अर देव मानुष गति में रह प्राप्त करता विषयसुख।।70।।
उपदेश से है सिद्ध देवों के नहीं है स्वभावसुख।
तनवेदना से दुखी वे रमणीक विषयों में रमे।।71।।
नर-नारकी तिर्यंच सुर यदि देहसंभव दुःख को।
अनुभव करें तो फिर कहो उपयोग कैसे शुभ-अशुभ ?।।72।।
वज्रधर अर चक्रधर सब पुण्यफल को भोगते।
देहादि की वृद्धि करें पर सुखी हों ऐसे लगे।।73।।
शुभभाव से उत्पन्न विध-विध पुण्य यदि विद्यमान हैं।
तो वे सभी सुरलोक में विषयेषणा पैदा करें।।74।।
अरे जिनकी उदित तृष्णा दुःख से संतप्त वे।
है दुखी फिर भी आमरण वे विषयसुख ही चाहते।।75।।
इन्द्रियसुख सुख नहीं दुख है विषम बाधा सहित है।
है बंध का कारण दुखद परतंत्र है विच्छिन्न है।।76।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

ज्ञानी पर का कर्त्ता नहीं होता

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 25 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

कटस्य कर्त्ताहमिति सम्बन्धः स्याद्द्वयोर्द्वयोः।
ध्यानं ध्येय यदात्मैव सम्बन्धः कीदृशस्तदा ।।25।।

मैं चटाई का कर्त्ता हूँ ह्न इसप्रकार अलग-अलग दो पदार्थों के बीच सम्बन्ध हो सकता है। जबकि आत्मा ही ध्यान और ध्येयरूप हो जाए तब सम्बन्ध कैसा ?

(गतांक से आगे .....)

पूज्यपादस्वामी एक अन्तर्मुहूर्त में हजारों बार अतीन्द्रिय आनन्द के झूले में झूलनेवाले मुनिराज थे। वे कहते हैं कि ह्न समझो भाई ! यह हित का उपदेश है। आत्मा के हित का सच्चा साधन आत्मा का ध्यान ही है। शरीर, वाणी, मन और कर्म तो आस्रवतत्त्व हैं। द्रव्यास्रवरूप होने से उनके द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों ही अजीव हैं; इसलिए तो इनसे आत्मा का हित सधता नहीं है। जीव की पर्याय में हुए शुभाशुभभाव भी पुण्य-पापरूप आस्रव तत्त्व हैं, उनसे भी आत्मा का हित नहीं सधता है।

अजीव, पुण्य-पाप तथा आस्रव तत्त्व तो आत्मा के लिये हितरूप नहीं हैं और हित के साधन भी नहीं हैं। शेष रहे संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्त्व ही आत्मा को हितरूप हैं। वे कैसे प्रगट हों ? उनके लिये यह उपदेश दिया है।

संवर-निर्जरा ही आत्मा के धर्म हैं, उसे प्रगट करने में निमित्त कर्त्ता कौन है ? करण कौन है ? ध्यान क्या है ? ध्यान करनेवाला कौन है ? इन समस्त प्रश्नों के जबाब में पूज्यपादस्वामी कहते हैं की आत्मा आप ही निजस्वरूप का साधन बनता है। उसे किसी निमित्त या रागादि के व्यवहार साधन की अपेक्षा नहीं है।

अहा ! आचार्य कुन्दकुन्ददेव साक्षात् सीमंधर भगवान के पास गये थे। वहाँ जाकर आठ दिन ठहरे थे। ज्ञान-ध्यान और अनुभव तो मुनिराज को था ही, लेकिन भगवान के पास जाने से उसमें खूब-खूब वृद्धि हुई; पश्चात् ये शास्त्र लिखे गये।

मद्रास के पास वंदेवास से पाँच मील दूर पौन्नूरहिल है, वहाँ कुन्दकुन्दाचार्य विचरते थे और वहीं पर उन्होंने समयसार, प्रवचनसार आदि शास्त्रों की रचना की।

ऐसे आचार्य कुन्दकुन्द के पश्चात् हुए पूज्यपादस्वामी इष्टोपदेश का स्वरूप स्पष्ट करते हुये कहते हैं कि ह्न अपनी आत्मा में संवर-निर्जरा का साधन करना ही इष्टोपदेश है, अन्य कोई रागवर्द्धक उपदेश इष्ट नहीं है।

जैसे श्रीफल में जटा, काचली और लाल छाल से सफेद गोला बिलकुल भिन्न-निराला है; उसीप्रकार आत्मा भी शरीरादि नोकर्मरूप जटा से, ज्ञानावरणादि आठ कर्मरूप काचली से और शुभाशुभ आस्रवभावरूप लाल छाल से पूर्णत: भिन्न निराला ज्ञायक है। श्रीफल के अंदर का गोला जैसे सफेद है और मिठास से पूर्ण भरा हुआ है; उसीप्रकार आत्मा शुद्धता और आंनद से भरा हुआ चैतन्य गोला है।

अनन्त काल से इस जीव ने सम्यग्दर्शन का क्या स्वरूप है ह्न यह लक्ष्य में ही नहीं लिया। अनन्त बार नवमें ग्रैवेयक तक गया, किन्तु फिर भी सम्यक्त्व की महिमा नहीं आयी और अनन्तकाल दु:ख में ही बीत गया। ऐसे दु:खी जीवों से ज्ञानी कहते हैं कि अरे भाई ! तुममें तो अनन्त शक्तियाँ भरी पड़ी हैं, तुम तो जीवत्व, चिति, दृशि, ज्ञान, सुख, वीर्य आदि परमेश्वरी शक्तियों के स्वामी हो।

अनन्तकाल में जितने भी ज्ञानी जीव हुये हैं, उन सबका एक ही उपदेश है ह्न **एक होय त्रण काल मा परमारथ नो पंथ।** आत्मा तो अतीन्द्रिय आनन्द का सागर है। सम्यग्दर्शन में उसका अंशरूप अनुभव होता है और मुनिदशा में क्षण-क्षण में ही अतीन्द्रिय आनंद का सागर उमड़ता है; इसी का नाम यथार्थ संवर-निर्जरा है तथा इसी से स्वभाव का साधन प्रगट होता है। भगवान की प्रतिमा अथवा साक्षात् भगवान की भक्ति-पूजा का शुभभाव स्वभाव का साधन नहीं बन सकता। अशुभ से बचने के लिए शुभभाव आते हैं; लेकिन वे संवर-निर्जरा के साधन नहीं

हैं। शुभभाव करते-करते संवर-निर्जरा और मोक्ष हो जायेगा ह्न यह भगवान का उपदेश नहीं है, इष्टोपदेश नहीं है।

भाई ! तुझे क्रिया करना है तो ध्यान की क्रिया कर, शरीर की क्रिया तो जड़ की क्रिया है, शुभभाव की क्रिया तो विभाव की क्रिया है। अन्तर में शुद्ध-आनन्दकंद को दृष्टि में लेकर निर्मलानन्द ध्यान की क्रिया कर। उस ध्यान की क्रिया का कर्त्ता आत्मा है, कर्म और करण भी आत्मा ही है। आनन्द देनेवाला और आनन्द लेनेवाला भी आत्मा स्वयं ही है।

अतीन्द्रिय आनन्द का निरन्तर वेदन करना ही आत्मा का कार्य है, पुण्य-पाप भावों का वेदन करना आत्मा का कार्य नहीं है।

आत्मा परमार्थस्वरूप है, पुण्य-पाप आदि भाव परमार्थस्वरूप नहीं है और एक समय की निर्मलपर्याय भी परमार्थस्वरूप नहीं है; क्योंकि द्रव्यस्वभाव में निर्मलपर्याय आती ही नहीं है; इसलिए द्रव्यस्वभाव को ही परमार्थस्वरूप कहा है, उसका परमात्मा के साथ एकीकरण किया है।

एक चैतन्यस्वरूप निज भगवान आत्मा को दृष्टि में लेकर अनुभव करे तो ध्याता-ध्यान-ध्येय का भेद नहीं रहता ह्न इसी का नाम संवर-निर्जरा है।

अरे भाई ! यह बात अनन्तकाल में कभी समझ में ही नहीं आयी। 'शुभभाव करना और उसका फल भोगना' ह्न यही बात अनन्तकाल से समझी है और उसे ही करता आया है; किन्तु राग और विकल्प से भिन्न निर्विकल्प, वीतरागबिम्ब, चिदानन्द घन, शुद्धस्वरूप आनन्दकन्द में एकाकार होने की बात इस जीव ने कभी एक सेकिण्ड भी नहीं समझी है। जैसा कि समयसार परमागम की चौथी गाथा में कहा है ह्न **सुदपरिचिदाणुभूदा सव्वस्स वि कामभोगबंधकहा ह्न** है सर्वश्रुत परिचित-अनुभूत भोग-बंधन की कथा।

तू स्वयं प्रभु है ह्न इसे स्वीकार कर ! ना मत कर ! विकल्प मत कर ! विकल्प का उत्पन्न होना तो विकार है, उसका लक्ष्य छोड़ दे। शरीर, वाणी, मन भी अजीव है, धूल है, उसका भी लक्ष्य छोड़ दे तथा द्रव्यकर्म-भावकर्म-नोकर्म का भी लक्ष्य

छोड़ना है। द्रव्यकर्म अर्थात् आठ कर्मों का उदय, नोकर्म अर्थात् बाह्य संयोग, उसमें साक्षात् भगवान हो तो उनका भी लक्ष छोडकर तथा भावकर्मों के भी विकल्प का लक्ष्य छोड़कर एक स्वभाव का लक्ष्य कर, आश्रय कर। अहाहा ! आचार्यदेव तो कितनी गूढ–गंभीर बात करते हैं !

सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्राणि मोक्षमार्ग:। तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय के इस प्रथम सूत्र में सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र को मोक्षमार्ग की निर्मल पर्याय कहा है। ये निर्मल वीतरागी पर्यायें भगवान परमस्वरूप के लक्ष्य से ही उत्पन्न होती हैं। तेरा लक्ष्य कहीं निमित्त की ओर तो नहीं है? कर्म, कर्म का उदय अथवा कषाय की मंदतारूप निमित्त की ओर तो तेरा लक्ष्य नहीं हैं ? इनसे कर्मों की निर्जरा होना कैसे संभव है ? ऐसा प्रश्न उठाकर आचार्यदेव निर्जरा तत्त्व सिद्ध करते हैं।

भगवान शुद्ध परमानन्द मूर्ति आत्मा का लक्ष्य करने से अंशरूप में संवर और भावनिर्जरा की उत्पत्ति होती है, तब वहाँ कर्म–नोकर्म का लक्ष्य नहीं होता । वह संवर–निर्जरा अपने स्वभाव के साधन से, ध्येय से और साध्य से ही प्रगट होती है। ऐसे वचन दिगम्बर भावलिंगी संतों के सिवा कौन कह सकता है ? कुछ लोग उपवासादि तपस्या से संवर–निर्जरारूप धर्म मानते हैं; लेकिन ऐसी बात यहाँ नहीं है। यह तो अनादिनिधन एक सनातन सत्य मार्ग है।

इस 25 वें श्लोक में आचार्यदेव यह सिद्ध करते हैं कि अन्य किसी भी परद्रव्य के लक्ष्य बिना एक स्वभाव के ही लक्ष्य से संवर–निर्जरा प्रगट होती है। वहाँ कर्मों की ओर लक्ष्य ही नहीं है तो कर्मों की निर्जरा हुई ह्न ऐसा कैसे कहा जा सकता है ? अध्यात्मयोग से कर्मों की शीघ्र निर्जरा हो जाये ह्न ऐसा कैसे कहा ? तो कहते हैं कि यह बात परमार्थ से नहीं है। व्यवहारनय से ऐसा कहा जाता है कि धर्मी के ध्यान से पुराने कर्मों की निर्जरा हो जाती है, लेकिन परमार्थ से ध्यान द्वारा शुद्धि की वृद्धिरूप निर्जरा होती है। कर्मों की निर्जरा कहना ह्न यह तो व्यवहार का कथन है। वास्तव में **शुद्धि की वृद्धि होना** ही सच्ची निर्जरा है। **(क्रमश:)**

निर्दोष अरहंतदशा कैसी ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की छठवीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

छुहतण्हभीरुरोसो रागो मोहो चिंता जरा रुजा मिच्चू।
सेदं खेद मदो रइ विम्हियणिद्दा जणुव्वेगो ।।6।।

क्षुधा, तृषा, भय, रोष, राग, मोह, चिन्ता, जरा, रोग, मृत्यु, स्वेद, खेद, मद, रति, विस्मय, निद्रा, जन्म और उद्वेग – ये अठारह दोष अरहंत भगवान में नहीं होते।

(गतांक से आगे ....)

अब टीका में अठारह दोषों का विस्तृत वर्णन करते हैं ह्न

(1) असातावेदनीय सम्बन्धी तीव्र अथवा मंद क्लेश करनेवाली **क्षुधा** है। अर्थात् विशेष प्रकार से असातावेदनीय कर्म के निमित्त से होनेवाली विशिष्ट शरीरावस्था के ऊपर लक्ष जाने पर मोहनीय कर्म के निमित्त से होनेवाली खाने की इच्छारूप आकुलता का नाम क्षुधा है।

आत्मा के आनन्दरूप लीनता के समय क्षुधा उत्पन्न ही नहीं होती। क्षुधा में निमित्त हो, इसप्रकार का असाता कर्म भगवान के नहीं होता। यहाँ शरीर की पर्याय को क्षुधा नहीं कहा; अपितु खाने की इच्छारूप दु:ख को क्षुधा कहा है। इच्छारूप दु:ख हो तभी शरीर की क्षुधा को निमित्त कहा जाये। भगवान को भूख लगती है और वह भोजन करते हैं, ऐसा जो मानता है, उसने तो भगवान को भी साधारण मनुष्य जैसा मान लिया। खाने की इच्छा हुई उसमें तो मोहनीय कर्म निमित्त है। भगवान के शरीर में इसप्रकार की दशा नहीं होती कि क्षुधा लगे और खाने की इच्छा हो। उनके ऐसी तीव्र असाता भी नहीं और भोजन की इच्छा भी नहीं तथा बाहर में भी आहार नहीं होता ।

(2) असातावेदनीय सम्बन्धी तीव्र, तीव्रतर, मन्द अथवा मन्दतर पीड़ा से

उत्पन्न होनेवाली **तृषा** है। अर्थात् विशिष्ट असातावेदनीय कर्म के निमित्त से होनेवाली विशिष्ट शरीरावस्था के ऊपर लक्ष जाने पर मोहनीय कर्म के निमित्त से जलादि पीने की इच्छारूप दु:ख तृषा है। उनके साधारण असातावेदनीय होती है; परन्तु ऐसी असाता नहीं होती, जिससे तृषा लगे। पानी पीने की इच्छा तो मोह है और भगवान के मोह होता नहीं; अत: तृषा भी नहीं होती। अरे ! जहाँ चैतन्य के आनन्द की तृप्ति वर्त रही है, वहाँ पानी की तृषा कहाँ से होगी ?

(3) भय – भगवान के भय नहीं होता। भगवान किसी की माला नहीं जपते, तथा अस्त्र-शस्त्र भी नहीं रखते। जिसको किसी का भय होगा, वही जाप जपेगा अथवा हथियार रखेगा। इस लोक का भय, परलोक का भय, अरक्षाभय, अगुप्तिभय, मरणभय, वेदनाभय और अकस्मातभय - यह भय के सात प्रकार हैं।

ऐसे भगवान को पहिचाने बिना सभी को सच्चा प्रभु माने तो मूढ़ता है। सर्वज्ञ परमात्मा कैसे होते हैं और उनका कहा हुआ मार्ग कैसा होता है ह्न यहाँ कुन्दकुन्दाचार्य देव उसकी पहिचान करा रहे हैं। ऐसे भगवान को पहिचानों और उनके द्वारा कथित आत्मा के धर्म को जानो।

(4) रोष – क्रोधी पुरुष का तीव्र परिणाम रोष है। भगवान के रोष नहीं होता, वे तो चैतन्यदर्पण हो गये हैं, सबको ज्ञातापने से जानते हैं। कोई जीव न माने तो उसके ऊपर रोष नहीं करते; क्योंकि क्रोध के परिणाम का उनके अत्यन्त अभाव है। जो शत्रु पर क्रोध करे उसे भगवान नहीं कहते।

(5) राग – प्रशस्त और अप्रशस्त के भेद से राग दो प्रकार का है। दया-दान शील, उपवास तथा गुरुजनों की वैयावृत्य आदि में उत्पन्न होनेवाला राग प्रशस्तराग है और स्त्री, राजा, चोर तथा भोजन संबंधी विकथा कहने अथवा सुनने का कौतुहल परिणाम अप्रशस्त राग है।

भगवान दान नहीं देते। दान का भाव पाप नहीं, पुण्य भाव है, प्रशस्त राग है अर्थात् शुभभाव है। जड़ के ग्रहण-त्याग की क्रिया तो पर है; उससमय उत्पन्न होनेवाला शुभराग पुण्य है ह्न ऐसा राग भगवान के नहीं होता। इसमें यह बात भी आ गई कि दानभाव भी राग है, धर्म नहीं; धर्म तो उससे भिन्न वस्तु है। रागरहित आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान-रमणता धर्म है। धर्म और पुण्य दोनों भिन्न-भिन्न वस्तुयें है। दान-

शील, तपादि का शुभभाव तो अनन्तबार किया; किन्तु वह मोक्ष का कारण नहीं है। उसका अभाव हो तब मोक्ष का कारण बने। भगवान के उन दानादि के भाव का अभाव है।

धर्म, पुण्य और पाप ह्न ये तीनों ही भिन्न-भिन्न वस्तुयें है। हिंसादिभाव तो पाप है, दया-दान आदि का भाव पुण्य है और अन्तर की श्रद्धा-ज्ञान करके एकाग्रता करना धर्म है। केवली के दान आदि के भाव नहीं होते; अत: ऐसे केवली भगवान की जिसे मान्यता हुई है, वह जीव दान इत्यादि के शुभभाव में धर्म नहीं मानता और यदि दान आदि के शुभभाव में धर्म माने तो उसने सर्वज्ञ भगवान को माना ही नहीं।

इसीप्रकार शील अर्थात् ब्रह्मचर्य आदि के शुभभाव भी भगवान के नहीं होते। अब्रह्म का भाव तो पाप है और ब्रह्मचर्य का भाव शुभभाव; इन दोनों में से एक भी भगवान के नहीं होता, उपवास आदि का शुभभाव भी भगवान के नहीं होता। देखो ! उपवास का शुभभाव भी धर्म नहीं, मैं तप करूँ ऐसी वृत्ति अरहंत परमात्मा के नहीं होती, वे तो वीतराग हैं और ज्ञानानन्द में लीन हैं।

प्रशस्त राग में दान-शील, तप और वैयावृत्य ह्न इन चार को मुख्य बताकर 'इत्यादि' कहा है। लोग तो दान-शील इत्यादि भाव में धर्म मान बैठे हैं; परन्तु यहाँ तो कहते हैं कि भगवान को ऐसे भाव होते ही नहीं। अरे ! जो भाव सर्वज्ञ भगवान के न हों वे भाव तेरा धर्म कैसे हो सकते हैं ? चैतन्य शुद्धचिदानन्द ज्ञाता-दृष्टा है, उसका भान किये बिना धर्म नहीं होता।

गुरुजनों की वैयावृत्य का भाव भगवान के नहीं होता, चतुर्विध संघ को भगवान नमस्कार नहीं करते और सिद्ध भगवान को नमस्कार करने की वृत्ति भी भगवान के नहीं होती। 'नमो तीथ्थस्स' ऐसा भगवान नहीं बोलते, छद्मस्थ गुरु हो तो उसका भी विनय भगवान नहीं करते; क्योंकि विनय-वन्दना का विकल्प तो छठवें गुणस्थान तक ही होता है। पश्चात् वन्द्य-वन्दक भाव का विकल्प ही नहीं होता; फिर भगवान को वह भाव कहाँ से होगा ? वे स्वयं पूर्ण परमात्मदशा को प्राप्त हुये हैं; फिर किसको वन्दन करने का भाव हो। मुनि या केवली भगवान के प्रति विनय-बहुमान का भाव प्रशस्तराग है ह्न वह राग भगवान के नहीं होता। राग का अभाव करके ही तो केवलज्ञान हुआ है।

भगवान के शुभराग नहीं होता यह बात पहले कही, अब अप्रशस्त राग भी नहीं होता है ह्न ऐसा कहते हैं । स्त्री, राजा, चोर तथा भोजन संबंधी बात करने अथवा सुनने में कौतूहल परिणाम का होना विकथारूप परिणाम हैं ह्न ऐसे परिणाम भगवान के नहीं होते।

(6) मोह – चार प्रकार के श्रमण संघ के प्रति वात्सल्य संबंधी मोह प्रशस्त है, इसके अतिरिक्त अन्य मोह अप्रशस्त है। ऋषि, मुनि, यति तथा अनगार – ये श्रमण के चार भेद हैं। ऋद्धिप्राप्त श्रमण ऋषि हैं, अवधि-मन:पर्यय-केवलज्ञान प्राप्त श्रमण मुनि हैं, उपशम अथवा क्षपक श्रेणी में आरूढ़ श्रमण यति हैं और सामान्य श्रमण अनगार हैं।

ऐसे चार प्रकार के श्रमण संघ के प्रति वात्सल्यभाव, भक्तिभाव उत्पन्न होना प्रशस्त मोह है ह्न ऐसा मोहभाव भगवान के नहीं होता।

सम्यग्दर्शन के आठ अंग कहे हैं, उनमें वात्सल्य भी आता है; परन्तु वह व्यवहार की बात है। भगवान के ऐसा वात्सल्य नहीं होता। एक केवली का दूसरी केवली के प्रति वात्सल्य नहीं होता। वात्सल्य तो पर की तरफ का मोह युक्त लक्ष है, वह आत्मस्वरूप नहीं है। संसार के कुटुम्ब आदि के ऊपर होनेवाला प्रेमभाव अप्रशस्त मोह है ह्न ऐसा मोह भगवान के नहीं होता। चार तीर्थ स्थापन करने का मोह भगवान के नहीं है। दिव्यध्वनि सहजपने खिरी और श्रोताओं ने अपनेभाव से समझकर मुनिदशा प्रकट की अर्थात् स्वयं अपनी योग्यता से चारों तीर्थ स्थापित हुये ह्न वहाँ निमित्तरूप से भगवान को तीर्थकर्त्ता कहा जाता है।

चारों प्रकार के श्रमण वीतराग साधु हैं ह्न आत्मा के भान सहित चारित्रदशा में झूलनेवाले संत हैं। चार तीर्थ से भगवान को मोह नहीं, उन्हें केवलज्ञान की अपेक्षा से मुनि कहते हैं।

(7) धर्मरूप तथा शुक्लरूप चिन्तन (चिन्ता-विचार) प्रशस्त हैं, इनके अतिरिक्त (आर्त्तरूप तथा रौद्ररूप) चिन्तन अप्रशस्त ही है। यहाँ शुक्लध्यान का अर्थ शुभ विकल्प समझना। भगवान के शुक्लध्यान की शुभ लगन नहीं होती। उनके परमानन्द में लीनतारूप शुक्लध्यान तो होता है; परन्तु उसकी चिन्ता अर्थात् विकल्प नहीं होता। **(क्रमश:)**

शक्तियों का संग्रहालय : भगवान आत्मा

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार नामक ग्रन्थाधिराज पर परमपूज्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका लिखी है। उसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में अनेकान्त का विस्तृत वर्णन करते हुये आत्मा की 47 शक्तियों का वर्णन किया है, साथ ही अनेक कलश भी लिखे हैं। उन पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने समय-समय पर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रवचन किये हैं, जो पाठकों के लाभार्थ क्रमश: प्रस्तुत हैं।

(गतांक से आगे .....)

देखो, इस कलश में आचार्यदेव ने आत्मा में से भेदों का बहिष्कार नहीं किया। यद्यपि आत्मा में अनन्तगुण हैं अवश्य; परन्तु अनन्त गुणमय होते हुए भी आत्मा अखण्ड एक ज्ञायक वस्तु है तथा इस अखण्ड की दृष्टि करने से ही आत्मा की प्राप्ति होती है, भेद की दृष्टि से नहीं। भेद की दृष्टि से तो विकल्प उठते हैं, निर्विकल्पता नहीं होती। अनन्त गुणों का पिण्ड एकरूप आत्मा है – ऐसा आत्मस्वरूप सर्वज्ञ के सिवाय और कौन कह सकता है ? अहा ! ऐसी आत्मवस्तु सर्वप्रकार से शान्त है –ऐसा हम अनुभव करते हैं।

अहा ! अनेकान्तस्वरूप भगवान आत्मा एकान्त शान्त भावमय है, पूर्ण शान्त है, अचल है, कर्मोदय से कभी चलायमान नहीं होता – ऐसे आत्मा को दृष्टि में लेना सम्यग्दर्शन है।

यहाँ कहते हैं कि एक-एक नय से शक्तियों को देखें तो आत्मा का खण्ड-खण्ड होकर नाश हो जायेगा, अखण्ड वस्तु ज्ञान में आयेगी ही नहीं।

प्रश्न – आत्मा खण्ड-खण्ड कैसे होगा ? शास्त्रों में तो आत्मा के विषय में ऐसा कहा है कि – ' न छिदन्ति, न भिदन्ति' अर्थात् आत्मा न छेदा जा सकता है, न भेदा जा सकता है आदि ?

उत्तर – कथन करने की अनेक अपेक्षायें हैं, उन्हें समझना चाहिए। वस्तु तो अखण्ड ही है; किन्तु एक-एक गुण को लक्ष्य में लेने पर आत्मा अनेक (खण्ड-खण्ड) रूप भासित होता है, अखण्डरूप भासित नहीं होता। ऐसा

इसका अर्थ है। वैसे तो आत्मा अनादि-अनन्त त्रिकाल अविनाशी है; किन्तु उस अखण्ड आत्मा में एक-एक भेद करके ग्रहण करने पर वह खण्ड-खण्ड होकर विनाश को प्राप्त होता है, अपने अखण्ड अस्तित्व का ही निषेध कर देता है। जब ज्ञान में अखण्डपना भासित नहीं हुआ तो अखण्डपना कैसे रहा ? अखण्ड तो है; परन्तु अखण्डता स्वीकार न करने से अज्ञानी के ज्ञान में अखण्डपने की नास्ति ही हुई न !

वस्तु में नित्य-अनित्य, एक-अनेक इत्यादि परस्पर विरुद्ध प्रतीत होनेवाले अनेक धर्म हैं; वस्तु सामान्यपने अभेदरूप और विशेषपने भेदरूप है; तथापि ज्ञानी तो वस्तु को सर्वशक्तिमय अभेद एक ज्ञानमात्रा अनुभव करता है। बस, इसी का नाम सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान है।

मैं एक चैतन्यवस्तु हूँ - ऐसी दृष्टि करके वस्तु में एकाग्र होकर परिणमने का नाम धर्म है। इसी का नाम आत्मा की स्वीकृति है, और यही स्वानुभव है। स्याद्वादी को इसमें विरोध नहीं है; बल्कि विरोध का निराकरण है।

अब, ज्ञानी अखण्ड आत्मा का ऐसा अनुभव करता है - इसप्रकार आचार्यदेव गद्य में कहते हैं -

न द्रव्येण खण्डयामि, न क्षेत्रेण खण्डयामि, न कालेन खण्डयामि, न भावेन खण्डयामि, सुविशुद्धएको ज्ञानमात्रभावोऽस्मि।

ज्ञानी शुद्धनय का आलम्बन लेकर ऐसा अनुभव करता है कि मैं अपने शुद्धात्मस्वरूप को न तो द्रव्य से खण्डित करता हूँ, न क्षेत्रा से खण्डित करता हूँ,, न काल से खण्डित करता हूँ और न भाव से खण्डित करता हूँ; मैं तो सुविशुद्ध एक ज्ञानमात्रा भाव हूँ।

यदि शुद्धनय से देखा जाये तो शुद्ध चैतन्यमात्रा भाव में द्रव्य-क्षेत्रा-काल-भाव से कुछ भी भेद दिखाई नहीं देता; इसलिए ज्ञानी अभेदज्ञानस्वरूप अनुभव में भेद नहीं करता।

ज्ञानी शुद्धनय का आलम्बन लेकर अनुभव करता है कि मैं द्रव्य-क्षेत्रा-काल- भाव से खण्डित नहीं होता अर्थात् 'मैं द्रव्य, क्षेत्रा, काल एवं भाव से जुदा हूँ - ज्ञानी ऐसा भेदरूप अनुभव नहीं करता। द्रव्य में ही चारों अभेदपने से समाहित हैं। ऐसा अखण्ड, अभेदरूप अनुभव करता है।

कलशटीका में कैरी (आम) का दृष्टान्त दिया है। जिसप्रकार कैरी में रेसा, छिलका, गुठली और मिठास - चारों अंश जुदे-जुदे नहीं हैं। उसीप्रकार एक आत्मद्रव्य-जीववस्तु में कोई अंश जीवद्रव्य है, कोई अंश जीवक्षेत्रा है, कोई अंश जीवकाल है और कोई अंश जीवभाव है - ऐसे चार भेद मानना तो विपरीतता है। वस्तुतः बात तो यह है कि - कैरी (आम) स्पर्श, रस, गंध, वर्ण युक्तपुद्गल का पिण्ड है, इसकारण मात्र स्पर्श से विचार करने पर वही कैरी रसमात्र है, गंधमात्र से विचार करने पर वही कैरी गंधमात्र है और वर्णमात्र से विचार करने पर वही कैरी वर्णमात्र है अर्थात् कैरी स्वभाव से तो एकरूप है, अखण्ड है, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण से कैरी (आम) जुदी वस्तु नहीं है।

इसप्रकार एक अखण्ड वस्तु को द्रव्य से देखें तो भी वह अखण्ड वस्तु है, क्षेत्र से देखो तो भी वह अखण्ड वस्तु है, काल से देखो तो भी वह अखण्ड वस्तु है और भाव से देखें तो भी वह त्रिकाली अखण्ड वस्तु है। चारों ही अभेद एक वस्तु है। ज्ञानी कहते हैं कि मैं एक ज्ञानमात्र भाव हूँ। चार जुदे-जुदे नहीं हैं।

शुद्धनय से देखा जाये तो शुद्ध चैतन्यमात्रा भाव में द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से कुछ भी भेद दिखाई नहीं देता है; अतः ज्ञानी अभेद ज्ञानस्वरूप अनुभव में भेद नहीं करता, उसे वस्तु अभेद ही अनुभव में आती है। देखो ! यह ज्ञानी की अनुभूति ! धर्मी ज्ञानी पुरुष अखण्ड एक वस्तु में भेद नहीं देखता है।

जो वस्तु का द्रव्य है, वही क्षेत्र है, वही काल है और वही भाव है। ज्ञानी अपनी ज्ञानमात्र वस्तु को एक अभेदरूप से ग्रहण करता है, खण्ड-खण्ड करके नहीं अनुभवता है। वस्तु को द्रव्य उसके असंख्यात प्रदेश को क्षेत्र, उसकी अवस्थाओं को काल और उसके अनंतगुणों को भाव कहा जाता है। ज्ञानमात्र वस्तु में ज्ञानी जीव इन भेदो को नहीं देखकर निर्विकल्प वस्तुमात्र को ही देखता है। भाई ! अन्तर्दृष्टि में भेद नहीं है, उसमें तो मात्र अभेद का ही अनुभव है।

ये दशधर्म नहीं, धर्म के दशलक्षण हैं; जिन्हें संक्षेप में दशधर्म शब्द से भी अभिहित कर दिया जाता है। जिस आत्मा में आत्म-रुचि, आत्म-ज्ञान और आत्म-लीनतारूप धर्म पर्याय प्रकट होती है, उसमें धर्म के ये दशलक्षण सहज प्रगट हो जाते हैं। ये आत्माराधना के फलस्वरूप प्रगट होनेवाले धर्म हैं, लक्षण हैं, चिह्न हैं।

ह्न धर्म के दशलक्षण : पृष्ठ - 7

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : चावल वर्षों तक रखा रहे पर पानी का निमित्त मिलेगा तभी पकेगा ?

उत्तर : चावल जब पकेगा तब अपने से अपनी योग्यता से पकेगा और उस काल में पानी निमित्तरूप से सहज ही होगा – ऐसा वस्तु स्वभाव है।

प्रत्येक द्रव्य की प्रत्येक पर्याय अपने स्वकाल में अपनी योग्यतानुसार ही होती है। उसकाल में बाह्यवस्तु पर निमित्त का आरोप आता है। यदि एक द्रव्य अन्य द्रव्य की पर्याय करे तो वह अन्य द्रव्य ही कहाँ रहे। अनन्त द्रव्य अस्तिरूप हैं। उन सबको भिन्न-भिन्न अस्तिरूप मानने से ही श्रद्धा-ज्ञान सच्चे होंगे।

प्रश्न : आत्मा में होनेवाले शुभाशुभभावों का मूल उपादान कौन है ?

उत्तर : अशुद्ध उपादान से आत्मा स्वयं शुभाशुभभावों में व्यापक होकर कर्त्ता होने से स्वयं (आत्मा) उनका कर्त्ता है। जब शुद्ध उपादान से देखें तो पुण्य-पाप भाव आत्मा का स्वभावभाव न होने से और वह शुभाशुभभाव पुद्गल के लक्ष से होता होने से पुद्गल का कार्य है। पुद्गल उसमें व्यापक होकर कर्त्ता होता है। जब स्वभाव के ऊपर दृष्टि जाती है, तब ज्ञानी योग और उपयोग का (राग का) स्वामी न होने से उसका (राग का) कर्त्ता नहीं है; किन्तु ज्ञानी के ज्ञान में राग निमित्त होता है।

प्रश्न : प्रत्येक द्रव्य का परिणमन स्वतंत्र और निरपेक्ष है, तो भी जब जीव को राग होता है, तभी परमाणु कर्मरूप से परिणमन क्यों करता है ?

उत्तर : जीव को राग हुआ, उससे परमाणु कर्मरूप से परिणमित नहीं हुआ है; किन्तु परमाणु के कर्मरूप से परिणमित होने का वही स्वकाल होने से जीव के राग की अपेक्षा बिना ही स्वतंत्ररूपेण परमाणु कर्मरूप से परिणमन करता है। ऐसा ही निमित्त-नैमित्तिक संबंध सहज है। यह बहुत सूक्ष्म बात है। निमित्त-नैमित्तिक संबंध की सहजता का अज्ञानी को भान न होने से ही उसे दो द्रव्यों में कर्त्ता-कर्मपने का भ्रम होता है। किसी भी द्रव्य के परिणमन को पर की अपेक्षा ही नहीं है; क्योंकि प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र ही परिणमन कर रहा है।

प्रश्न : जीवद्रव्य अन्य द्रव्यों द्वारा उपकृत होता है ह्न ऐसा शास्त्रों में कथन आता है। कृपया खुलासा कीजिए ?

उत्तर : शास्त्रोल्लेख में व्यवहार के कथन से ऐसे आता है कि इस जीव का अन्य द्रव्य उपकार करते है। इसका अभिप्राय ऐसा है हि एक द्रव्य के कार्यकाल में दूसरे द्रव्य की पर्याय निमित्तमात्र-उपस्थितिमात्र धर्मास्तिकायवत् है ह्न ऐसा ही इष्टोपदेश ग्रन्थ में कहा है तथा समयसार गाथा दो में भी कहा है कि प्रत्येक द्रव्य अपने ही गुण-पर्यायों का स्पर्श करता है; किन्तु दूसरे किसी भी द्रव्य को स्पर्श नहीं करता है। एक द्रव्य की पर्याय में दूसरे द्रव्य की पर्याय का तो अत्यन्त अभाव है, ऐसी वस्तुस्थिति में भला एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का क्या करे ?

प्रश्न : द्रव्य ही उपादानकारण हो सकता है, पर्याय नहीं; यह मान्यता बराबर है या नहीं ?

उत्तर : पर्याय उपादानकारण न हो सके और मात्र द्रव्य ही उपादानकारण होवे ह्न यह मान्यता बराबर नहीं है। द्रव्यार्थिकनय से उपादानकारण द्रव्य है ह्न यह बात बराबर है; क्योंकि प्रत्येक पर्याय द्रव्य और गुण का ही परिणमन है और उससे इतना सूचित होता है कि यह पर्याय इस द्रव्य की है।

दृष्टान्त ह्न मिट्टी में घट बनने की योग्यता सदा है – ऐसा बतलाना द्रव्यार्थिकनय है अर्थात् मिट्टी का घड़ा मिट्टी से ही हो सकता है, अन्य द्रव्य में से नहीं हो सकता। इनके विपरीत जब पर्यायार्थिकनय से कथन किया जाये अर्थात् जब पर्याय की योग्यता बतलाना हो तब प्रत्येक समय की योग्यता उपादानकारण है और वह पर्याय स्वयं कार्य है। यदि सूक्ष्मता से विचार किया जाये तो कारण-कार्य एक ही समय में होता है। (देखो – तत्त्वार्थसार, मोक्ष अधिकार, गाथा-35 तथा उसका अर्थ) इसका अर्थ ऐसा है कि प्रत्येक समय प्रत्येक द्रव्य में एक ही पर्याय होने की योग्यता है; किन्तु उसके पूर्वसमय की अथवा उत्तर समय की पर्याय में वह योग्यता नहीं होती है। यह कथन पर्यायार्थिकनय से समझना। ●

पयूर्षण पर्व के अवसर पर कौन – कहाँ

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर विद्वान भेजने की व्यवस्था की गई है; जिनकी सूची यहाँ दी जा रही है। यद्यपि पर्यूषण पर्व 18 सितम्बर से प्रारम्भ होगें; अभी पर्व प्रारंभ होने में लगभग 1 माह शेष है; फिर भी दिनांक 13 अगस्त 2004 तक हमारे पास 412 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं तथा अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 11 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार अभी सिर्फ 313 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों एवं आनेवाले आमंत्रणों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 162 स्थानों पर तो श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है। निश्चित विद्वानों की सम्पूर्ण सूची जैनपथप्रदर्शक के सितम्बर (प्रथम) के अंक में प्रकाशित की जायेगी।

विशिष्ट विद्वान में ह्न **1.कोटा :** बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', कोटा **2.कोल्हापुर :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर **3.जयपुर (टोडरमल स्मारक एवं आदर्शनगर) :** पं. रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर **4.मन्दसौर (नई आबादी) :** पं.पूनमचंदजी छाबडा, इन्दौर **5.कोल्हापुर :** ब्र.यशपालजी जैन, जयपुर **6.इन्दौर (साधनानगर) :** डॉ. उत्तमचंदजी जैन, सिवनी **7.सागर (गौरमूर्ति) :** पं. अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली **8.कोलकाता (नया बाजार) :** पं. विमलप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन **9.खनियांधाना :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री, खनियाँधाना **10.मुम्बई (बोरीवली) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियाँधाना **11.खतौली :** ब्र.संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाडा **12. दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम', देवलाली **13. अजमेर (वीतराग–विज्ञान) :** पं. कपूरचंदजी 'कौशल', भोपाल **14.जयपुर (टोडरमल स्मारक एवं आदर्शनगर) :** पं. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर **15.राजकोट :** पं. प्रदीपकुमारजी झांझरी, उज्जैन **16. मुम्बई (मलाड़) :** पं. राजेंद्रकुमारजी, जबलपुर **17. छिन्दवाड़ा :** पं. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर **18.अलीगढ :** पं. अशोककुमारजी लुहाडिया, अलीगढ़ ।

विदेश में ह्न **1.कनाड़ा** : ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद **2.अमेरिका** : पण्डित दिनेशभाई शहा, मुम्बई **3.अमेरिका** : विदुषी उज्ज्वलाजी शहा, मुम्बई **4.अमेरिका** : पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री, मुम्बई ।

मध्यप्रदेश प्रान्त ह्न **1.खुरई :** विदुषी कल्पनाजी जैन सागर, **2.भिण्ड (देवनगर) :** पं. सुरेशचन्दजी सिंघई भोपाल, **3.उज्जैन :** पं. श्रेयांसकुमारजी जैन जयपुर, **4.सिवनी :** पं. निर्मलकुमारजी जैन सागर, **5. गुना :** पं. सुबोधकुमारजी सिंघई सिवनी, **6.अंबाह (बडा मंदिर) :** पं. कोमलचंदजी जैन टडा, **7.बेगमगंज :** पं.नंदकिशोरजी गोयल विदिशा, **8.लुहारदा :** पं.बाबुलालजी बांझल गुना, **9.टीकमगढ :** पं. दीपककुमारजी जैन जयपुर, **10.छिंदवाडा :** पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री, **11.जावरा :** पं. बाबुभाई मेहता फतेपुर, **12.भोपाल (कोहेफिजा) :** पं. सुरेशचंदजी जैन टीकमगढ, **13.भोपाल (चौक):** पं. मनीषकुमारजी शास्त्री रहली, **14.करेली :** पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री अहमदाबाद, **15.बाकल :** पं.रूपचंदजी जैन बंडा, **16.विदिशा (किलाअंदर):** पं. देवेन्द्रकुमारजी सिंगोडी, **17.अकाझिरी :** पं. नितुलजी शास्त्री भिण्ड, **18.सिवनी :** पं. शिखरचंदजी जैन सिवनी, **19.दलपतपुर :** पं. निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, **20.मंदसौर (गौतमनगर) :** पं. कांतिकुमारजी पाटनी इंदौर, **21.बीना (तारणतरण) :** पं. समकितजी शास्त्री सिलवानी, **22.भानगढ :** पं. रमेशजी जैन भोपाल, **23.मंडलेश्वर :** पं. सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद, **24.धार :** पं. आशीषजी शास्त्री, जबेरा **25.इंदौर (मल्हारगंज) :** पं. देवेंद्रकुमारजी जैन कुंभोज बाहुबली, **26.पथरिया :** पं. भागचंदजी जैन पथरिया, **27.गंजबासौदा :** पं. संजीवकुमारजी शास्त्री इंदौर, **28.ग्वालियर (सोडा का कुआँ) :** पं. जगदीशसिंहजी पवार उज्जैन, **29.शहडौल :** पं. अमितकुमारजी जैन जबेरा, **30.सिलवानी :** पं.विकासकुमारजी मोदी मौ, **31.ग्वालियर (लश्कर) :** पं. कमलकुमारजी मलैया जबेरा, **32.बीड:** पं. अरूणकुमारजी लालोनी, **33.भिंड (परमागम) :** पं. दिलीपजी बाकलीवाल इंदौर **34.खनियांधाना :** विदुषी विमलाबेन, जयपुर **35.अशोकनगर :** पं. चन्दुभाई मेहता फतेपुर, **36.शाहगढ़ :** पं. संजयकुमारजी सेठी जयपुर, **37.कुचडौद :** पं. तेजमलजी गंगवाल इंदौर, **38.अम्बाह (पार्श्वनाथ मंदिर) :** पं.नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, **39.पथरिया (पार्श्वनाथ मंदिर) :** पं. कुंदनमलजी पथरिया, **40.मौ :** पं. पद्मचदजी अजमेरा रतलाम, **41.सागर (मकरोनिया) :** पं. शिखरचंदजी विदिशा, **42.आरोन :** पं.श्रेणिकजी जबलपुर, **43.रांझी (जबलपुर) :** पं. निलयजी शास्त्री टीकमगढ, **44.बडनगर :** पं. मनीषकुमारजी कहान खडैरी, **45.रहली :** पं. आदित्यकुमारजी शास्त्री खुरई, **46.ग्वालियर (फालका बाजार) :** पं. महेशचंदजी जैन ग्वालियर, **47.सोनागिर :** पं. मांगीलालजी कोलारस, **48.केसली :** पं. कमलचंदजी पिडावा, **49.राघौगढ :** पं. अमितकुमारजी शास्त्री भोपाल,**50.ग्वालियर (मुरार) :** पं. शीतलजी पाण्डे उज्जैन, **51.लुकवासा :** पं. शशांक जैन अभाना, **52.द्रोणगिरि :** पं. सरदारमलजी बेरसिया, **53.महिदपुर :** पं. अनुराज जैन फिरोजाबाद, **54.नरवर :** पं. प्रीतेशजी जैन बाँसवाडा, **55.अमरवाडा :** पं. राजेंद्रकुमारजी अमरपाटन, **56.बीना :** पं. मोतीलालजी जैन बीना, **57.उमरिया :** पं. नितिनजी अहमदाबाद, **58.बनखेडी :** पं. विकासजी जैन खनियांधाना, **59.बाबई :** पं. विमोशजी जैन खडैरी, **60.शुजालपुर मंडी :** पं. सुदीपकुमारजी तलाटी घाटोल, **61.अंबाह :** पं. विपिनकुमारजी फिरोजाबाद, **62.इंदौर (गांधीनगर) :** पं. विपुलकुमारजी मोदी, **63.सनावद :** पं. संभवजी जैन नैनधरा, **64.करैरा :** पं. नेमचंदजी शास्त्री, **65.फुँटेरा :** पं. अनंतवीरजी जैन फिरोजाबाद, **66.दुर्ग :** पं. सतीशचंदजी पिपरई, **67.जगदलपुर :** पं. स्वप्निलजी जैन नागपुर, **68.बंडा बेलई :** पं. दीपेश जैन गुढा, **69.आरोन :** पं. प्रदीपकुमारजी शास्त्री दमोह, **70.पेंढ्रा रोड :** पं. नितिनकुमारजी शास्त्री इंदौर, **71.अमायन :** पं. चेतन जैन खडैरी, **72.रतलाम :** पं. अशोकजी सिरसागंज, **73.बडवाह :** पं. स्वतंत्रजी जैन खरगापुर, **74.जबलपुर :** पं. पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर **75.शाहपुर :** पं. आशीषजी जैन कोटा, **76.कर्रापुर :** पं. सुरेशजी काले राजुरा, **77.सुसनेर :** पं. निखिलजी जैन बंडा, **78.गढाकोटा :** पं अजितजी जैन गढखेडा, **79.गौरझामर :** पं. अरविंदकुमारजी शास्त्री टीकमगढ, **80.इंदौर (शक्करबाजार) :** पं. सतीशचंदजी कासलीवाल महिदपुर।

महाराष्ट्र प्रान्त ह्न **1.मुम्बई (भायन्दर वेस्ट) :** मीठाभाईजी दोशी, हिम्मतनगर **2.मुम्बई**

: पं.परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 3. **मुम्बई (मलाड) :** पं. राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर 4.**मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पं. सुशीलकुमारजी जैन, राघौगढ़ 5.**मुम्बई (घाटकोपर) :** पं. रमेशचन्दजी जैन, जयपुर 6.**मुम्बई (दादर) :** पं. संजयकुमारजी जैन, नागपुर 7.**मुम्बई (डोंबीवली) :** पं.बाहूबलीजी ढ़ोकर, पुणे 8.**अकलूज :** पं. धन्यकुमारजी भोरे, कारंजा 9.**औरंगाबाद :** ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा 10.**नागपुर :** पं. देवेन्द्रकुमारजी, बिजौलिया 11.**सोलापुर :** विदुषी पुष्पाबेन, खण्डवा 12.**नातेपुते :** विदुषी आशाजी जैन, मलकापुर 13.**खामगांव :** विदुषी स्नेहलताजी उदापुरकर, अकोला 14.**कारंजा (लाड) :** पं. गुलाबचन्दजी जैन, बीना 15.**वर्धा :** पं. फूलचन्दजी मुक्किरवार, हिंगोली 16.**गजपंथ (सिद्धक्षेत्र) :** पं. राजूभाई जैन, कानपुर 17.**वसमतनगर :** पं. केशवरावजी जैन, नागपुर 18.**देवलाली :** पं. सुदीपकुमारजी जैन, बीना 19.**देऊलगांवराजा :** विदुषी सुधाबहन, छिन्दवाड़ा 20.**अहमदनगर** : पं.दिलीपकुमारजी महाजन, मालेगाँव २१.**मलकापुर :** पं.नंदकिशोरजी मांगुलकर, काटोल 22.**पुसद :** पं.संजयजी महाजन, वाशिम २३.**अक्कलकोट :** पं.विजयकुमारजी राऊत, रिठद २४. **हिंगोली :** पं.अभयकुमारजी शास्त्री, खैरागढ़ २५.**मालशिरस** : पं.अनिलकुमारजी बेलोकर, सुलतानपुर २६. **शिरडशहापुर :** पं.प्रशांतकुमारजी काले २७.**कुम्भोज बाहुबली :** पं.नेमीनाथजी बालिकाई २८.**पुणे (स्वाध्याय भवन) :** पं.विक्रांतकुमारजी शहा, सोलापुर २९.**वसमतनगर :** पं.नेमीचन्दजी महाजन ३०.**मुम्बई(अणुशक्तिनगर):** पं.सुमेरचंदजी बेलोकर ३१.**मुम्बई (दहीसर) :** विदुषी शुद्धात्मप्रभाजी ३२.**मुम्बई :** पं.अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ३३.**मुम्बई :** श्रीमती स्वानुभूति जैन ३४.**मुम्बई (भायन्दर ईस्ट) :** विदुषी राजकुमारीजी जैन, सनावद ३५.**मुम्बई(एवरशाइननगर) :** पं.ज्ञायकजी शास्त्री, राजकोट ३६.**मुम्बई :** पं.अनिलजी शास्त्री, मुम्बई ३७.**मुम्बई :** पं. फूलचन्दजी शास्त्री, उमराला ३८.**वाशिम(ज.कॉलोनी) :** पं.अभिषेकजी शास्त्री, सिलवानी ३९.**पिंपरीराजा :** पं.अश्विनकुमारजी नानावटी ४०.**ढासाला :** पं.वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, बरां ४१.**मालेगांव :** पं.आकेशजी जैन, छिन्दवाड़ा ४२.**सदाशिवनगर :** पं.अनिलजी आलमान ४३.**फालेगांव :** पं.दीपककुमारजी अथणे।

गुजरात प्रान्त ह्न 1.**अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पं. शैलेषभाई शहा, तलोद 2.**अहमदाबाद (पालडी) :** पं. सुनीलकुमारजी जैनापुरे, राजकोट 3.**अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पं. चन्दुभाईजी दोशी 4.**अहमदाबाद(बहेरामपुरा) :** पं.देवीलालजी जैन, उदयपुर 5.**अहमदाबाद (अमराईवाडी) :** पं. संजयकुमारजी जैन, बड़ामलहरा 6.**अहमदाबाद (बापूनगर) :** पं. महावीरजी जैन, उदयपुर 7.**अहमदाबाद(ओढ़व) :** पं. अनिलकुमारजी इंजी.भोपाल 8.**अहमदाबाद (न्यू जैन मिलन) :** पं.राकेशकुमारजी जैन, लिधौरा 9.**अहमदाबाद(नारायणनगर) :** पं. आशीषकुमारजी शास्त्री, टीकमगढ़ 10.**बडोदरा :** पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री, ललितपुर 11.**तलोद :** पं.महेन्द्रकुमारजी शास्त्री, भिण्ड 12.**दाहोद :** पं. रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर 13.**रखियाल :** पं. रमेशजी मंगल, सोनगढ़ 14.**हिम्मतनगर :** पं. मेहुलकुमारजी मेहता, कोलकाता 15.**राजकोट :** पं. वृजलालजी अजमेरा, राजकोट 16. **मोरबी :** पं. प्रवेशकुमारजी भारिल्ल, करेली 17.**वापी :** पं. प्रशान्तकुमारजी मोहरे, सोलापुर 18.**पोरबन्दर :** विशालकुमारजी शास्त्री, हिंगोली 19. **जेतपुर** : पं. नयनकुमारजी शहा, हैद्राबाद 20. **अहमदाबाद :** पं.दीपचन्दजी जैन।

उत्तरप्रदेश प्रान्त ह्न 1.**बडौत :** पं. अजीतकुमारजी, फिरोजाबाद 2.**ललीतपुर :** पं. अनुभवप्रकाशजी शास्त्री, कानपुर 3. **सहारनपुर :** पं. संजयकुमारजी जैन, खनियाधांना 4. **मुजफ्फरनगर :** पं. प्रद्युम्नकुमारजी जैन, मुजफ्फरनगर 5. **मेरठ :** पं. अरहंतप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन 6. **कानपुर (कारवालोनगर) :** पं. अरविन्दकुमारजी टीकमगढ़ 7. **गाजियाबाद :** पं. राजेन्द्रकुमारजी बंसल, अमलाई 8. **कुरावली :** पं. शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, मौ 9.**फिरोजाबाद (धर्मशाला) :** पं. गोकुलचन्दजी सरोज, ललीतपुर 10. **मड़ावरा :** पं. रमेशचन्दजी जैन, करहल 11.**शेरकोट :** प्रदीपकुमारजी, धामपुर 12. **यमुनानगर :** पं. संतोषकुमारजी शास्त्री, अंबड़ 13. **रामपुर मणिहारन :** वीरेन्द्रकुमारजी वीर, फिरोजाबाद 14. **आगरा (ताजगंज) :** पं. राजेन्द्रकुमारजी शास्त्री, खड़ैरी 15. **मैनपुरी** : पं. प्रवीणकुमारजी शास्त्री, जयपुर 16. **धामपुर :** पं. राहुलजी शास्त्री, बिनौता 17.**बानपुर :** पं. जितेन्द्रकुमारजी शास्त्री, सिंगोड़ी 18. **गंगेरू :** पं. जितेन्द्रकुमारजी शास्त्री, खड़ैरी 19.**अफजलगढ़ :** नयनेशकुमारजी शास्त्री, ओबरी 20. **जसवन्तनगर** : पं. पवनकुमारजी शास्त्री, मौ २१. **आगरा (नमकमण्डी) :** पं.सुदीपकुमारजी शास्त्री, बरगी 22. **कासगंज :** पं. आशीषजी शास्त्री, जबेरा 23. **नकुड़** : पं. सचिन्द्रजी जैन, गढ़ाकोटा २४. **वसुन्धरा (गाजियाबाद) :** पं.विपिनजी शास्त्री, फिरोजाबाद 25.**बाह :** पं. नवीनकुमारजी शास्त्री, बरां 26. **एत्मादपुर** : पं. राहुलजी शास्त्री, बदरवास २७. **डांडा-इटावा :** पं.आशीषजी शास्त्री, कोटा 28.**जेतपुरकलां :** पं. सौरभजी शास्त्री गढ़ाकोटा।

राजस्थान ह्न 1.**कोटा (रामपुरा) :** पं. वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, 2.**कोटा (इंद्रविहार) :** पं. अशोकजी रामपुर, 3.**अजमेर :** पं. कपूरचंदजी कौशल भोपाल, 4.**बाँसवाडा :** पं.राजकुमारजी जैन बाँसवाडा, 6.**पिडावा :** पं.कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, 7.**अलीगढ :** पं.पदमचंदजी जैन, 8.**कुआँ :** पं.लक्ष्मीचंदजी जैन डूगरपुर, 9.**किशनगढ :** पं.पवनकुमारजी जैन, 10.**उदयपुर (केशवनगर) :** पं.श्रेयांसकुमारजी शास्त्री जबलपुर, 11.**भीलवाडा :** पं.अनिलकुमारजी पाटौदी बडनगर, 12.**डबोक :** पं.मीठालालजी जैन कलिंजरा, 13.**कुशलगढ :** पं.भोगीलालजी जैन उदयपुर, 14.**टोकर :** पं.वीरेन्द्रकुमारजी जैन डडूका, 15.**बारां :** पं.भगवतीप्रसादजी जैन बारां, 16.**भींडर :** पं.रितेशकुमारजी शास्त्री डडूका, 17.**उदयपुर (भामाशाह मंदिर) :** पं.प्रकाशदादा झांझरी उज्जैन, 18.**उदयपुर (सेक्टर 11) :** पं.गौरवकुमारजी शास्त्री इंदौर, 19.**बेगूं :** पं.चंदूलालजी जैन किशनगढ, 20.**बीकानेर :** पं. अरविंदकुमारजी सुजानगढ, 21.**चित्तौडगढ :** पं.सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, 22.**उदयपुर (सन्मति भवन) :** पं.सुरेशचंदजी सिंघई भोपाल, 23.**उदयपुर (चंद्रप्रभ मंदिर) :** पं.अंचलप्रकाशजी जैन ललितपुर, 24.**बिजौलिया :** पं.जयकुमारजी जैन बारां, 25.**झालरापाटन :** पं.विक्रांतकुमारजी पाटनी झालरापाटन, 26.**बेरी :** पं.माणिकचंदजी जैन बेरी, 27.**अजमेर :** पं. संदीपजी शास्त्री डडूका, 28.**नौगाँव :** पं.नागेशकुमारजी जैन पिडावा, 29.**नौगाँव :** पं.दीपकजी धवल भोपाल, 30.**अलवर :** पं.प्रेमचंदजी जैन अलवर, 31.**प्रतापगढ :** पं.कन्हैयालालजी टोकर, 32.**अलवर :** पं.मानमलजी जैन कोटा, 33.**साकरोदा :** पं.शाकुलजी जैन मेरठ, 34.**अजमेर :** पं.चंद्रप्रभातजी जैन बडामलहरा, 35.**पीसागन :** पं.मीठालालजी भगनोत, 36.**लकडवास :** पं.अमितजी जैन लुकवासा, 37.**किशनगढ :** पं.भँवरलालजी कोटा, 38.**कुरावड :** पं.चैतन्यजी कोटा, 39.**कानौड :** पं.शोभालालजी जैन, 40.**बूंदी :** पं.देवेन्द्रजी अकाझिरी,

41.**कूण :** पं.निखिलजी जैन कोतमा, 42.**वैर :** पं.एलमचंदजी जैन, 43.**लांबाखोह :** पं.राहुलजी जैन अलवर, 44.**लूणदा :** पं. विकासजी जैन बानपुर।

दिल्ली प्रान्त – 1. पं. राजमलजी जैन, भोपाल 2. पं. सिद्धार्थजी दोशी, रतलाम 3. पं. किशोरकुमारजी शास्त्री, बैंगलोर 4. पं. राजेशजी शास्त्री, सिंगोली 5. पं. मुकेशजी शास्त्री, सिंगोली 6. पं. पंकजजी शास्त्री, बण्डा 7. पं. मिश्रीलालजी जैन, खनियाधांना 8. पं.कनकलताजी जैन, खनियाधांना 9. विवेकजी जैन, सिवनी 10. पं.अशोकजी मांगूलकर, राघौगढ़ 11. पं.कस्तुरचन्दजी बजाज, भोपाल 12. पं. कस्तुरचन्दजी जैन, भोपाल 13. अविरलजी शास्त्री, विदिशा 14. पं. संदीपजी शास्त्री, गोहद 15. पं. पुरनचन्दजी जैन, मौ 16. पं. अरूणकुमारजी मोदी, सागर 17. पं. जयप्रकाशजी शास्त्री, साहिबाबाद 18. पं. अशोकजी जैन, दिलशाद गार्डन 19. सत्येन्द्रमोहनजी जैन, पडपडगंज 20. पं. नितिनजी जैन, नांगलराया २१. पं.अमितजी जैन, फूँटेरा 22. पं.सुनीलजी जैन, भोपाल २३. पं.दिनेशजी कासलीवाल, उज्जैन २४. पं.विकासजी कंधारकर २५. पं.अनिलजी धवल, कानपुर २६. पं.प्रकाशदादा, मैनपुरी २७. पं शांतीलालजी सोगानी, महिदपुर २८. पं.धनसिंहजी ज्ञायक, पिड़ावा २९. पं.अभिषेकजी शास्त्री, रहली ३०. पं.चैतन्यजी सातपुते, गजपंथ ३१. हितेशजी शास्त्री, चिचोली ३२. पं. सुबोधकुमारजी शास्त्री, शाहगढ़ ३३. पं.सौरभजी शास्त्री, शाहगढ़ ३४. पं.सुरेन्द्रजी शास्त्री, शाहगढ़ ३५. चिन्मयकुमारजी शास्त्री, पिड़ावा ३६. पं.गणतंत्रकुमारजी शास्त्री, खरगापुर ३७. पं.माधवप्रसादजी शास्त्री, शाहगढ़ ३८. पं.मनीषजी शास्त्री, पिड़ावा ३९. पं.पुलकितजी शास्त्री, कोटा ४०. पं.सुशीलजी शास्त्री, फूँटेरा ४१. पं.मनोजजी शास्त्री, खड़ैरी ४२. पं.राकेशजी शास्त्री ४३. पं. भानुकुमारजी शास्त्री खड़ैरी, ४४. पं.मनीषकुमारजी शास्त्री 'सिद्धान्त' ४५. पं.सुनीलजी बेलोकर शास्त्री, सुलतानपुर ४६. पं. वीरागजी शास्त्री, जबलपुर 47.पं. हेमंतजी शास्त्री, आँवा 48.पं. प्रभातजी शास्त्री, टीकमगढ 49.पं.धर्मेन्द्रजी शास्त्री, जयपुर 50.पं. संजयजी शास्त्री, बड़ामलहरा 51. ब्र. हेमचंदजी हेम भोपाल 52.पं.राजेन्द्रजी टीकमगढ।

अन्य प्रान्त ह्न **१.कोलकाता(पद्दोपुकुर) :** पं.राकेशकुमारजी शास्त्री, अलीगढ़ **२.कोलकाता (नया मन्दिर) :** विदुषी समताजी झांझरी, उज्जैन **३.कोलकाता (खडगपुर) :** पं.सुरेद्रकुमारजी, उज्जैन **४.कोलकाता(नया मन्दिर) :** पं.अभिनयजी शास्त्री, जबलपुर 5.**कोलकाता(बाली) :** पं.चिन्मयकुमारजी शास्त्री, गुढ़ाचन्दजी **६.बैंगलोर :** पं.अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड **७.सरिया :** विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी, उज्जैन **८.सरिया :** विदुषी पुष्पाजी झांझरी, उज्जैन **९.गण्णौरमण्डी :** पं.महेशकुमारजी, भोपाल **१०.रामगढ़ (हजारीबाग) :** पं.रतनचन्दजीचौधरी, कोटा **११. हिसार :** पं.कैलाशचन्दजी शास्त्री, मोमासर **१२. सरधना :** पं.हुकमचन्दजी सिंघई, राघौगढ़ 13.**हजारीबाग :** पं. वीरचन्दजी जैन **१४. बेलगाँव :** पं.योगेशजी शास्त्री, बरा 15. **नवलूर :** पं. बाहूबलीजी भोसगे 16. **कोयम्बटूर :** पं. जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री, उदयपुर 17. **एर्नाकुलम (कोचीन) :** पं. महावीरजी मांगूलकर, कारंजा 18. **एर्नाकुलम (कोचीन) :** पं. अजीतकुमारजी शास्त्री, मौ 19.**एर्नाकुलम (कोचीन) :** पं. संदीपकुमारजी शास्त्री, बिनौता 20. **एर्नाकुलम (कोचीन)** : दीपककुमारजी डांगे, आजेगाँव 21. **ऋषिकेश :** पं.निकलंकजी शास्त्री, कोटा 22. **सिकन्दराबाद** : पं. वरूणकुमारजी शाह **२३. पुरुलिया :** पं.मनीषकुमारजी शास्त्री, नकुड़ 24. **इण्डी :** पं. राजेन्द्रकुमारजी पाटील, एलिमुन्नोली।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित –

27 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 8 अगस्त से 17 अगस्त, 2004 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा 27 वें बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। दिनांक 8 अगस्त को उद्घाटन श्री रमेशचन्दजी मंगलजी मेहता परिवार मुम्बई एवं श्री कांतिभाई मोटाणी परिवार मुम्बई के करकमलों से हुआ।

सभा की अध्यक्षता श्री मोतीचन्दजी लुहाड़िया, जोधपुर ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री विमलकुमारजी जैन नीरु कैमिकल्स दिल्ली, श्री अभिनन्दनप्रसादजी सहारनपुर एवं श्री दि. जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर मंचासीन थे। विशिष्टअतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी जयपुर, श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ़, श्री नेमीचन्दजी पहाड़िया पीसांगन, श्री शांतीलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री कन्हैयालालजी दलावत उदयपुर एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री मिलापचन्दजी डंडिया जयपुर मंचासीन थे।

समारोह में शिक्षण-शिविर का महत्त्व बताते हुए डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि ह्न आज का युग शिविरों का युग है, जहाँ हर छोटे से छोटे कार्य को सम्पन्न करने के लिये शिविर लगाये जाते है; ताकि कम समय में अधिक से अधिक कार्य हो सके। साथ ही उन्होंने कहा कि इन आध्यात्मिक शिविरों की नींव सर्वप्रथम पूज्य गुरुदेवश्री के सानिध्य में सोनगढ़ से प्रारंभ हुई। जो आज भी अनवरतरूप से चल रही है तथा भविष्य में भी चलती रहेगी।

उद्घाटन सभा के पूर्व श्री निहालचन्दजी जैन परिवार, ओसवाल इण्डस्ट्रीज, जयपुर के करकमलों से झण्डारोहण किया गया। शिविर के आमन्त्रणकर्त्ता श्री सुखदयालजी देवड़िया परिवार केसली (म.प्र.) एवं श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार कोटा (राज.) तथा विधान के आयोजनकर्त्ता श्री बाबूलालजी पंचोली परिवार, थांदला एवं श्री महिपालजी धनपालजी शाह परिवार, बाँसवाड़ा था।

सभा का संचालन ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद ने किया तथा आभार प्रदर्शन श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर ने किया।

शिविर के अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रतिदिन प्रात: प्रवचनसार ग्रन्थ की 23 से 26 गाथाओं तक तथा रात्रि में प्रतिदिन मोक्षमार्गप्रकाशक के नौवें अधिकार में **पुरुषार्थ से मोक्षप्राप्ति** विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। आपके प्रवचनों के पूर्व प्रारंभिक पाँच दिन दोनों समय डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के समयसार की 19 वीं गाथा पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

इसके अतिरिक्त डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व दोनों समयों में पण्डित पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित देवेन्द्रकुमारजी सिंगोड़ी के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा निमित्तोपादान, ब्र. यशपालजी जैन बेलगाँव द्वारा गुणस्थान विवेचन, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद द्वारा छहढाला, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा परमभावप्रकाशक नयचक्र एवं पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री रहली द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षायें ली गई।

दोपहर की व्याख्यानमाला में प्रतिदिन क्रमश: डॉ.श्रेयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, डॉ.भागचन्दजी जैन, पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ का विविध विषयों पर लाभ मिला।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार बोर्ड का अधिवेशन रविवार दिनांक 15 अगस्त, 2004 को दोपहर 2 बजे रखा गया।

दिनांक 17 अगस्त को समापन समारोह के अवसर पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने शिविर की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

शिविर में पूरे देश से पधारे 1272 आत्मार्थियों ने लाभ लिया। जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान के अनेक सदस्य बनें। शिविर के विस्तृत समाचार जैनपथप्रदर्शक के सितम्बर (प्रथम) अंक में देखें।

टिकिट भेजकर सत्साहित्य नि:शुल्क मंगा लें

आध्यात्मिक रुचिसम्पन्न **पण्डित नेमीचन्दजी पाटनी, आगरा** द्वारा जिनवाणी का सूक्ष्मता से अध्ययन करके साररूप में लिखित **सुखी होने का उपाय भाग-1 से 8 तक,** 8 पुस्तकों का सैट, जिनके कुल पृष्ठ - 1294 और कुल मूल्य 70/- रुपये हैं को श्री मगनमल सोभागमल चैरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई की ओर से मन्दिरों, संस्थाओं, त्यागियों, मुमुक्षुओं को स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंट स्वरूप दिया जा रहा है।

इच्छुक महानुभाव निम्न पते पर डाक खर्च के लिये **17/- (सत्रह रुपये)** के फ्रेश डाक टिकिट भेजकर मंगा लेवें। डाक टिकिट भेजने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर, 2004 है।

पता ह्न प्रबन्धक, नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग,
श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

17 से 19 अगस्त, 2004	**मुम्बई**	**स्थानकवासी पर्यूषण**
07 से 09 सितम्बर, 2004	**कोबा-अहमदाबाद**	**आध्यात्मिक शिविर**
11 से 17 सितम्बर, 2004	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
18 से 29 सितम्बर, 2004	**कोल्हापुर**	**दिगम्बर पर्यूषण**
17 से 26 अक्टूबर, 2004	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**